जनवाचन आंदोलन

जनवाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव–गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने–लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव–गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरुक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति
मूल्य : 6 रुपये

सरला से बनी सरलाजी

विनय दुबे

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

सरला से बनी सरला जी : विनय दुबे
Sarla Se Bani Sarlaji : Binay Dube

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: पंकज झा
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1997, 1999, 2003, 2006

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 6 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi****, Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,*
email: bgvs@vsnl.net

सरला से बनी सरलाजी

विनय दुबे

सरला से बनी सरलाजी

छोटा-सा एक
गाँव जमानी
नदी किनारे
जिसकी आबादी कम
जिसमें बच्चों का
स्कूल एक
है अस्पताल भी

गाँव जमानी
आसपास जिसके
जंगल
जंगल के पार
पहाड़ी ऊँची-ऊँची
छोटी-छोटी

कभी जागती
कभी ऊँघती
कभी सोई-सोई
चाँद जहाँ से आता
जाता दूर जहाँ से
रातों में
उस पार
चाँदनी रातों में उस पार

फिर जब
रात अँधेरी होती

सब कुछ धीरे धीरे
खो जाता
दूर पहाड़ी
जंगल
पेड़ नदी
सब खो जाते

फिर आता दिन
उगता सूरज
धीरे-धीरे
धीरे-धीरे
गाँव जागता
नदी जागती
आसपास के पेड़ जागते
खेत और खलिहान जागते
गाय जागती
भैंस जागती
पंछियों के पंख जागते
और जागते लोग
जागते बच्चे-बूढ़े
काम में फिर लग जाते
अपने-अपने

लोग गाँव के सुखी
आपसी भाई-चारा
जिनमें सभी जाति के
सभी धर्म के
सभी वर्ग के
लोग
हिन्दू हैं
कुछ मुसलमान हैं
ईसाई भी कुछ
सिख भी हैं
व्यापारी कुछ
कुछ मजूर हैं
लेकिन सब में भाई-चारा
रहते हैं सब हिल मिल करके
और मनाते
सभी तीज-त्योहार
गाँव में खुशहाली है
अमन चैन है
विगत एक दो बरसों से
सब ठीक-ठाक है

गाँव जमानी
यहाँ गाँव में
सरला जी हैं

सरला जी सरपंच
गाँव की मुखिया
सबको अच्छी लगती
क्योंकि सभी की उनको चिंता
सरला जी को सबकी चिंता

गाँव रहे खुशहाल
प्रगति हो सबकी
कष्ट नहीं हो

कभी किसी को
कहीं किसी को
सुख-सुविधा हो
हो सबके हित
सरला जी को सबकी चिंता
सरला जी सबकी मुखिया हैं

सरला जी को सबकी चिंता
बच्चे पढ़ें
पढ़ें बड़े भी
साक्षर हों सब
सब नर-नारी
सब जानें
सब समझें दुनिया
भीतर की
बाहर की
घटनाओं की
समझबूझ हो
सबके सब ही जागरूक हों
लोग गाँव के

सरलाजी को सबकी चिंता
बच्चों की
बूढ़ों की चिंता

महिलाओं-पुरुषों की चिंता
नदी, पेड़, पर्वत की चिंता
गााय, भैंस, बकरी की चिंता
हवा, धूप, पानी की चिंता
खेतों-खलिहानों की चिंता
श्यामू की, करमू की चिंता
गीता की सीता की चिंता
सरलाजी को सबकी चिंता।

गाँव जमानी
यहाँ गाँव में
सरलाजी हैं
सरलाजी सरपंच
गाँव की मुखिया हैं
सरला जी को सबकी चिंता

एक समय था
कल ही की तो बात
गाँव के इन लोगों के बीच
अकेली सरलाजी थीं
नहीं नहीं
केवल सरला थीं
घोर गरीबी में जीतीं
बेपढ़ी-लिखी केवल सरला थीं
किन्तु आज वे सरलाजी हैं
सरलाजी को सबकी चिंता

कल ही की तो बात
तब नहीं जानता था
कोई भी सरलाजी को
सरला जी
केवल सरला थी
कल ही की तो बात।

घोर गरीबी
गुमनामी के अंधियारों में
एक औरत
काट रही थी जीवन अपना
एकाकी
जीवन के दुख

दुक्खों के पहाड़
ढोती कंधों पर अपने
घोर गरीबी
गुमनामी के अँधियारों में
चुपचाप
जिन्दगी सरला जीती

एक औरत
पाल रही थी पेट
पेट बेटा-बेटी का
पति का
बूढ़े सास-ससुर का
फटेहाल
करती काम
दो-चार घरों में
चौका-बरतन

एक औरत
जीवन के कड़वे सच
पीती घूँट-घूँट
कड़वे सच पीती
घूँट-घूँट
दिन रात सोचती
खटती रहती

गलती रहती
किन्तु लिये आँखों में सपने

एक औरत
सरला जो थी
सदा देखती रहती सपने
सपनों की दुनिया
अमन-चैन
खुशियों की दुनिया
सरला देखा करती सपने

सपने
जैसे नीले नभ में
उड़ी जा रही दूर
दूर ऊपर वह
जहाँ सभी कुछ अच्छा-अच्छा
न कोई दुख
न तकलीफें ही

सपने
जैसे दूर क्षितिज के पार
एक परिवार
खेलता-हँसता

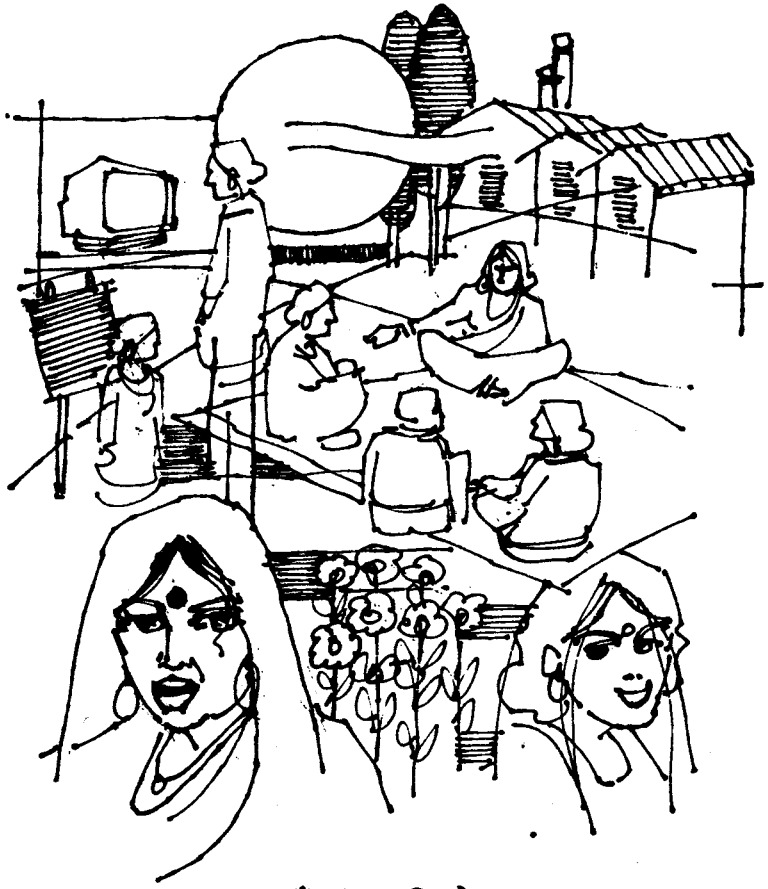

जहाँ संग पति के वह
मौज मनाती
बाग-बगीचे
सैर-सपाटे
बेटा-बेटी खेल खेलते
तितली के संग
फूलों के संग

सपने
जैसे एक नदी में
शीतल जल में
नीचे-नीचे
सब
सबके सब सपरिवार
सास-ससुर उसके
आनंदित
सुखी
और उससे प्रसन्न
आशीर्वाद देते
देते रहते आशीर्वाद
हर क्षण उसको

सरला रोज देखती सपने
सपनों की दुनिया में
खो जाती वह

कल ही की तो बात
यही दो-ढाई बरस
पहले की
सरला रोज देखती सपने

एक औरत
सिर पर सूरज धरे
घूमती घर-घर
दिन भर
भूखी प्यासी
करती चौका-बरतन

एक स्त्री
बढ़ती आगे
आगे बढ़ती
अँधकार में
धीरे-धीरे
पाँव बढ़ाती
बचती-बचती
आगे बढ़ती
जिम्मेदारी लादे सिर पर
पति की
बच्चों की
सास-ससुर की जिम्मेदारी
नाकारा पति
जीवन उसका ऐसा
जैसे कीड़े का हो
पड़ा गटर में कीड़ा

पति शराबी
मिले नहीं मदिरा
तो शव
बोझ बना सब पर
समाज पर
घर पर
पत्नी पर

बच्चों पर
पति शराबी सरला का
बोझ बना सरला पर
जीवन जीता

जीता क्या
ऐसा जीना भी
क्या जीना था
उसका
जैसे कीड़े का हो
जीवन
कीड़ा पड़ा गटर में

बच्चे छोटे
ढंग के खाने
और पहनने से
थे वंचित
रहते थे बीमार
हड्डियाँ जिनकी दिखतीं
सदा घूमते-फिरते रहते
इधर-उधर
मैदान-पोखरों
लावारिस से
बेटा-बेटी

सरला के
फिरते लावारिस

सरला चिंतित
क्या होगा मेरे बच्चों का
क्या होगा भविष्य बच्चों का
सरला चिंतित

एक औरत
जिये जा रही थी
तलाश में
सुखद दिनों की
अच्छे दिन आएँगे
ऐसा सोच-सोच
दुख आज के
सहज भाव से भूल-भूल
हर दिन गुजारती
गाँव जमानी में
सरला
एकाकी
घोर गरीबी
गुमनामी में

कल ही की बात
जमानी गाँव
डूबता-उतराता था
अंधकार में
बच्चे-बूढ़े सभी
रह रहे अंधकार में
अशिक्षा में

गुरबत में
घोर कलह में

अंधक़ार में
सबके अपने अपने मजहब
मजहब की दीवारें अपनी
दीवारों के आर-पार
टोले सबके अपने-अपने
सब सड़े-गले
निर्जीव
धर्म के आडम्बर थे
थोथे विचार थे
और मान्यताएँ मिथ्या थीं

कल ही की तो बात
जमानी गाँव
डूबता-उतराता था
अंधकार में
आशंकित रहता दंगों से
भेद-भाव से
छुआछूत से
जात-पाँत से
ऊँच-नीच से

कल ही की तो बात
सबके अपने-अपने मंदिर
सबके अपने-अपने गिरजा
सबकी अपनी-अपनी मस्जिद
सबकी अपनी-अपनी ड्योढ़ी

सबकी अपनी-अपनी संगत
सबकी अपनी-अपनी सरहद
सबके अपने-अपने पानी
सबके अपने-अपने ईश्वर
सबकी अपनी-अपनी पूजा
सबकी अपनी-अपनी मंशा
सबके अपने-अपने नारे
सबके अपने-अपने कद थे
सबके अपने-अपने दमखम
सब अपने अंधियारों में थे कैद
मुक्ति की किरण दूर तक
नजर न आती
कल ही की तो बात
जमानी गाँव
डूबता-उतराता था
अंधकार में

अंधकार में
पाँव बढ़ाती
चली जा रही
एक स्त्री
धीरे-धीरे
चली जा रही

अंधकार में
पेट पालती अपनों का
बेटा-बेटी का
सास-ससुर का
पति का
अंधकार में
एक स्त्री
एकाकी

कल ही की तो बात
उगा पूरब से सूरज

दिशा-दिशा जागी
एक स्त्री
एकाकी

उसने देखा आकाश
देखा पहाड़
नदी झरने
मैदान-खेत
फिर दूर क्षितिज के पार
उगा पूरब से सूरज
दिशा-दिशा जागी
जागी फिर दिशा-दिशा

सीखा उसने लिखना-पढ़ना
सरला ने लिखना-पढ़ना सीखा धीरे-धीरे
सभी सब जगह बदला-बदला
सोच बना वैज्ञानिक उसका
चीजों के
घटनाओं के बारे में

सोच नया
सरला ने पाया
दुनिया में रहने का रंग-ढंग
संघर्षों की नई राह में

अधिकारों की नई समझ के साथ-साथ
अपने वजूद को उसने देखा

कल ही की बात
कि फिर धीरे-धीरे सब
बदला
रहा बदलता सब कुछ धीरे-धीरे
गाँव जमानी में
जागी हर दिशा-दिशा
फैला प्रकाश
पूरब से सूरज उगा

पंचायत में
सरला ने कर दिया सिद्ध
खुद को
खुद के वजूद को

पंच बनी
सरपंच बनी फिर
सरला से सरला जी बनी
एक स्त्री
गाँव जमानी में

अपने त्याग से
और लगन से
श्रम से
श्रद्धा से
सरला ने खोजे नये क्षितिज
अपनी उन्नति के नये द्वार
द्वार गाँव की उन्नति के
जागी हर दिशा-दिशा

बच्चे खुश
सास-ससुर भी खुश
पति ने भी छोड़ी शराब
फिर लगा कमाने थोड़ा कुछ
खुद को बदला

गाँव जमानी
नदी किनारे
छोटा सा एक
कायाकल्प हुआ
फिर उसका
पूरब से सूरज उगा
जागी दिशा-दिशा।

::::::